REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

संजीव के कहानी साहित्य का शैलीगत मूल्यांकन

प्रा.डॉ. रामचंद्र मारूती लोंढे
क्रांतिसिंह नाना पाटील महाविद्यालय, वाळवा
ता. वाळवा, जि. सांगली.

व्यक्ति के हृदय के भावों को अभिव्यक्त करने का तरिका याने शैली है । शैली याने विशिष्ट प्रकार से लिखने का ढंग। कहानी की शैली के बारे में डॉ. भूलिका त्रिवेदी लिखिती है "भाषा शैली का संबंध कहानी के सभी तत्वों के साथ है और उसकी अच्छाई या बुराई का प्रभाव पुरी कहानी पर पडता है। कहानी में शब्द चयन, पद- मैत्री, सुसंगठित वाक्य विन्यास,अकुंठित प्रवाह, अलंकार योजना, भाषा की चित्रोपमता, मुहावरे, लक्षणा व्यंजना आदि शब्द शक्तियों का सफल प्रयोग, हास्य-व्यंग का पुट आदि शैली के प्रधान गुण है। भाषा सौष्ठव के साथ-साथ कहानी के लिए संगति और प्रभाव की एकता भी महत्त्वपूर्ण है। हिंदी कहानी में विशेष रूप से ऐतिहासिक शैली, आत्मकथात्मक शैली, पत्र शैली डायरी शैली और कथोप-कथन शैली प्रचलित है। शैली को लेकर डॉ. गुलाबराय के विचार दृष्टव्य लगते है, "शैली का संबंध कहानी के किसी एक तत्व से नहीं वरन् तत्वों से है और उनकी अच्छाई या बुराई का प्रभाव पूरी कहानी पर पडता है। कला की प्रेषणीयता अर्थात दूसरों को प्रभावित करणे की शक्ति शैली पर ही निर्भर करती है। किसी बात के कहने या लिखने के विशेष प्रकार को शैली कहते है। इसका संबंध केवल शब्दों से नहीं वरन विचार और भावों से भी है।"[1] इस उदाहरण से विदित होता है कि कहानी में कथावस्तु, पात्र, संवाद, देश काल वातावरण तथा उद्देश्य आदि सभी तत्त्वों के साथ घनिष्ठ संबंध होता है।

इससे स्पष्ट होता है कि अपनें भावों, विचारों अनुभवों के सशक्त रूप में बताने की कला याने शैली है । शैली कहानी की जान है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। कहानी के शिल्प का उद्देश संवेदनाओं और भावनाओं को अभिव्यक्त करना हैं। इसी कारण कहानीकारों और आलोचकों ने कथा-शिल्प की भाषा के बारें में काफी विचार, विमर्श किया है । संजीव लिखते है, "भाष गढ़ी नहीं जाती---- इसे तो जीवन-जगत और प्रकृति के नाना कार्य व्यापारों से ग्रहण किया जा सकता हैं। विविधता कभी खत्म नहीं होगी सवाल सिर्फ यह रह जाता है कि हमें क्या कहना है, कला का अभिप्रेत क्या है। और जिन लोगों तक हमें अपनी बात पहुँचानी है। उन तक कला को कितने सक्षम ढंग से संप्रेक्षित किया जा सकता है।" इससे स्पष्ट होता है कि साहित्य संवेदनात्मक या वैचारिक उद्देश्य की अभिव्यक्ति का माध्यम है। और भाषा उस माध्यम की शक्ति है। यदि भाषा उपयुक्त न हो तो साहित्य अपने लक्ष्य से भटक जा सकता है।

कथा विषय या संवेदना की अभिव्यक्ति के लिए संजीव ने कथा-साहित्य की भाषा को अधिक से अधिक सरस, स्वाभाविक, प्रभावात्मक एवं रोचक बनाने के लिए अनेक शैलियों का प्रयोग किया है। संजीव की कहानियों पर फिल्मों के शिल्प का भी पर्याप्त प्रभाव है। 'में चोर हूँ मुझ पर थूकों, तिरबेनी का तडबन्ना' हिमरेखा आदि कहानिया फिल्मों की तरह दृश्य संयोजित लगती है। 'मानपत्र' कहानी में उन्होंने मानपत्र लेखन को ही एक शैली बना दिया है। लेकिन वह मानपत्र के अलावा आरोप-पत्र लगती है।

इससे स्पष्ट होता है कि संजीव ने अपने कथा साहित्य में सिर्फ पारंपारिक शैलियों का ही प्रयोग नहीं किया है बल्कि कुछ नये किस्म की शैलियों का भी प्रयोग किया है। उनमें वर्णनात्मक, संवाद, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, साक्षात्कार, पूर्वदिप्ती शैली, काव्यात्मक, फंतासी, प्रथम पुरूष आदि अनेक शैलियों का प्रयोग संजीवजी ने कहानी साहित्य में किया है जिनमें से महत्त्वपूर्ण शैलियों का विवेचन-विश्लेषण निम्नलिखित रूप से किया गया हैं।

1. आत्मकथा शैली :

संजीव की कहानियों के शिल्प अवलोकन की शुरूआत करते ही सबसे पहले कथावाचक से मुलाकात होती है। पहले संग्रह 'तीस साल का सफर नामा' की पहली कहानी 'अपराध' से लेकर अंतिम संग्रह खोज तक की कहानियों में कथावाचक प्रमुखता के साथ मौजूद है। 'अपराध', लिटरेचर, भूमिका, 'मुर्दगाह', ऑप्रेशन जोनाकी', किस्सा एक बिमा कंपनी की एंजेसी का, 'नकाब', पूत-पूत आदि अनेक कहानियों में 'मैं' शैली का प्रयोग किया हैं जिससे कहानियाँ मर्मस्पर्शी एवं प्रभावात्मक बन पडी है। जैसे- 'लोडशेडिंग कहानी में' हमारे इस छोटसे परिवार में फिलाहल छ. सदस्य है। भैया-भाभी, बहन शीला, भाई के दो बच्छे और में''[2] प्रेतमुक्ति कहानी में 'अपने ये पुष्टिकारण दवाएँ सुरेन्द्रर को क्यों दी? वह खुद भी तो एफोर्ड कर सकता है। जब की यहाँ ऐसे भी जरूरत मंदों को मैंने आपको लौटाते देखा है। जिनके पास खरीदने के पैसे तक नहीं होंगे? मैं डॉ. मुर्ताजा पर एक बारगी बरस पडा।''[3] ऑपरेशन जोनाकी में मैं कह ही रहा हूँ कि जब अपना सच मुझ पर इंपोज करना ही चाहते है तो बोलिए न आपकी संतुष्टि के लिए आपकी किस-किस बात पर मुझे 'हाँ' या 'ना' कहना पडेगा''[4] इससे स्पष्ट होता है कि संजीव ने अपनी कहानियों में 'मैं' अर्थात आत्मकथात्मक शैली का काफी मात्रा में प्रयोग किया है जो योग्य एवं सार्थक परिलक्षित होता है।

2. संवाद शैली :

संवाद का अर्थ कथोप-कथन है। संजीव की कहानियों की तुलना में उनके नाटक साहित्य में संवाद प्रभावात्मक एवं सजीव लगते हैं। लेकिन कहानी में भी संवाद शैली का प्रयोग किया है। उदा. शिनाख्त कहानी में कालेज में बम फटने के कारण उसकी तहकीकत करने हेतू पुलिस छात्रावास में आ जाती है तब पुलिस और छात्रों का संवाद परिलक्षित होता है ''कहाँ गया हरामी का पिल्ला?''

'हम हियाँ पर है सर.....'। दूसरी ओर के बरामदे से मेरी खिडकी पर गिडगिडता रहा असलम। ''वहाँ क्या कर रहा है? कान मे ढेपी डाला है?'' सर बडा डर लग रहा था। सर मारिएगा नही पहले बात तो सुन लीजिए।''असलम अपना कमरा खोलकर समर्पन की मुद्रा में खडा हो गया था।

हजारी बाग का है का----? दुसरे सज्जन बोले।
एक घुटी-घुटी हँसी गुड गुडांयी।
"नय सर जहाँनाबाद कै हैं।"
ऐ नोट कीजिए, ई जरुर नक्सली हैं"[5]

इससे स्पष्ट होता है कि संजीव की कहानियों में संक्षिप्त, रोचक एवं प्रभावात्मक संवाद परिलक्षित होते है। जिसके कारण संजीव के कहानियों में रोचकता निर्माण हुई।

3. वर्णनात्मक शैली :

इस शैली में किसी पात्र घटना, दृश्य या प्रसंग का वर्णन, विवरण प्रस्तुत किया जाता है। उदा. 'सीपियों का खुलना' कहानी में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। जैसे : 'भोर की ताजी हवा में उसके रुखे बाल रुखी पंखुरियों की मांनिद झिरक रहे थे। अब वह उस घूरे पर खडा था, जहाँ बुहारकर फेंके गये गलीज कचडे और असले फूल मरे पडे फतिंगे उनके पर और ऐसी तमाम वाहियात चीजे थे।"[6]

'मक्तल' कहानी में भी वर्णनात्मक शैली का चित्रण हुआ है जैसे - "मैंने सहमी-सहमी आँखे से देखा उलूल जुलूल और रेगिस्तान की तरह रुक्ष थे। अपनी कुर्सियों से धीरे-धीरे वे प्रेतों की तरह उठे और सायों की तरह मुझे घेरकर खडे हो गये।"

'ऑपरेशन जोनाकी' में भी वर्णनात्मक शैली का उदाहरण द्रष्टव्य है - "बातें करते करते कहीं भटक से गये है।"अनिमेष दा। शायद प्लेट में परोसे गये मुर्गी पर जा टिकी है नजर, वैसे यह हमारा वहम भी हो सकता है।"[8] इससे विदित होता है कि संजीव की कहानियों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग परिलक्षीत होता हैं।

4. पत्रात्मक शैली :

इस शैली के द्वारा पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ एवं उसकी मानसिकता का चित्रण हो सकता है। इसमें पात्र जो प्रत्यक्ष रुप में जो बातें कह नहीं सकते उन बातों को वह पत्र के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकता है। जैसे 'लिटरेचर' कहानी में पत्रात्मक शैली का प्रभावात्मक रुप से प्रयोग हुआ है। जैसे "तुक कितना अच्छा लिखते हो। काश मैं भी तुम्हारी तरह लिख पाती। तुम्हारे ही कॉलेज की बीए प्रथम वर्ष की छात्रा हूँ, तीन तारीख की शाम पाँच बजे गुडी नदी के बगल में बन रहे मंदिर के पास आओगे। ईर्ष्यालू तुम्हारी।"[9]

"आप यहाँ है' कहानी में भी पत्रात्मक शैली का प्रयोग द्रष्टण्य है, जैसे "भैया, दौड में जीत उसी की होती है जो सबसे आगे निकल जाता है। चाहे लंगी मारकर ही, या गलत ट्रेक हथिया कर ही । पुरस्कार पाने का जुनून ही सवार रहता है उस समय मगर मुझे खुशी और संतोष है कि मैंने लंगी नही मारी, गलत ट्रैक नहीं पकडी। पीठ पर तुम्हारा छोडा हुआ बोझ था, परिवार का, उसे लेकर पुरी दौड दौडनी थी मुझे। वैसे जानता हूँ। यह बातें अवान्तर हैं, इनका हिसाब-किताब नहीं हुआ करता दौड के इतिहास में"[10] 'प्रेतमुक्ति' कहानी में जगेसर का घर से लिखा पत्र परिलक्षित होता है। इससे स्पष्ट होता है कि संजीव के कहानी साहित्य में पत्रात्मक शैली का प्रयोग जरुर हुआ है लेकिन कम मात्रा में।

5. पूर्वदीप्ती शैली:

'फ्लैश बैक' पध्दति संजीव की कहानियों के शिल्प की एक प्रमुख पहचान है। 'अपराध', 'मक्ताल', 'घर चलो दुलारी बाई', 'मरोड', 'धावक', 'प्याज के छिलके', 'दो बीघे जमीन','नकाब', 'कठपुतली ','टीस ','लिटरेचर', 'प्रेरणास्त्रोत ' आदि कहानियों में कथा का निर्माण मुख्यत: 'फ्लैश बैक' चित्रण की पध्दति से ही किया गया है। 'कठपुतली ' कहानी में पूर्वदीप्ती शैली का प्रयोग परिलक्षीत होता है- जैसे "मेरे जहन के अलबम का एक एक चित्र फडफडा उठा है वे दिन जब एक दुबली-पतली नाटी औरत को मैंने अपने सामने वाले मकान की छत पर कभी साडी फैलाते, कभी बाल झटकते, कभी खडे होकर आने- जाने वालों को घुरते देखा था फिर वे दिन जब मुहल्ले की एक निहायत बुरी औरत के रुप में वे कस्बे की जुबान-जुबान पर लहरा उठी थी।"[11]

फ्लैश बैक खत्म होने के पश्चात कथावाचक उनके घर पहुँचाता है और देखता है कि उन्होंने रस्सी के फंदे से लटककर आत्महत्या कर ली। कहानी के अंत में कथावाचक को महसूस होना है कि कल्याणी दी का शव उससे पुछ उठेगा 'क्या-तुम भी इसे आत्महत्या मानत हो? इस प्रश्न में उत्तर या निष्कर्ष निहित है कि यह आत्महत्या नहीं बल्कि प्रतिरोध है। 'फ्लैश बैक' की कथा इस निष्कर्ष का आधार उपलब्ध कराती है।

6. भाषण शैली :

संजीव की अनेक कहानियों में कोयल खदान कारखना, मैनेजमेण्ट तथा मजदूरों का भी चित्रण हुआ है। उन्होंने मजदूरों की बदहाली जीवन तथा मैनेजमेण्ट द्वारा उनके शोषण एवं संघर्ष का यथार्थवादी चित्रण किया है। कारखाना मालिक, खदान, मालिक, उद्योगपति, तथा भ्रष्ट व्यवस्था द्वारा कामगार एवं मजदूरों का शोषण किया जाता है। मजदूरों ने प्रतिरोध के रूप में छेडे गए आंदोलनों को अंजाम देने के लिए संजीव ने भाषण शैली का प्रयोग किया है। उदा, "नेता" कहानी में मजदूर नेता अपना आंदोलन जारी रखने के लिए भाषण देता है- "साथियों, आप इनसे कह दे कि मजदूर पोसा हुआ कुत्ता नहीं जो इस पोसी हुई युनियन के कहने पर अपने हरताली भाईयों से गद्दारी करे। पुडी मिठाई कौन चाभता हैं?"[12]

'कन्फेशन' कहानी का प्रारंभ ही भाषण शैली से हुआ है- जैसे 'के लूडाँगा को लियारी के हमारे बहादूर साथियों।"...

परिस्थितियों ने आज हमें जीवन मरण के ऐसे नाजूक और निर्णायक मोड पर लाकर खडा कर दिया है। जहाँ एक ही जीज बचती है। 'करो या मरो'। सन इकहत्तर में कोलियारियों का राष्ट्रीयकरण हुआ था तब यह कहा गया था कि कोयला राष्ट्र की संपत्ती है, मगर आज वही सरकार उसे निजी मालिकानों को बेंच रही है।"[13]

इससे स्पष्ट होता है कि संजीव की कहानियों में भाषण शैली का प्रयोग भी प्रभावात्मक रूप से परिलक्षित होता है, जिसके कारण साहित्य सरस, रोचक एवं सफल बना हैं।

7. काव्यात्मक शैली :

संजीव की कुछ कहानियों में कविताओं और गीतों का भी उपयोग किया गया है जिससे भावगत प्रवाहपूर्णता आती है। सुख-दुख और आशा निराशा के क्षणों में काव्य फूट पडते हैं। अंग्रेजी के रव्याति प्राप्त

कवि वर्डसवर्थ कविता की परिभाषा करते हुए कहते है, जिसका हिंदी अनुवाद है "कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक है। जिसका स्त्रोत शांति के समय में स्मृत मनोवेगों से फूटता है।"[14]

संजीव की कहानियों में काव्यात्मक शैली का प्रयोग परिलक्षित होता है । 'सागर-सिमांत' कहानी मे नापिक नशीबन का दर्द माझियों के गीतों से परिलक्षित होता है- जैसे: "के जास रे भाटी डांग
बोइया । अमार भाई बोलेरे ।
कॅइयो नागर नितो बोइल्या.....। के जासरे ।
प्राण कांदे । कांदे रे प्राण। प्राण कांदेर ....
पोडा मॅन रे बुझाइले
बोझा ना SS। कांदेरे SS। सुजन माझी रे, भाई रे
कइयो गियाना ।
असिल सपने तो देखा बिते बोइस्या .... । के जास"[15]
इससे स्पष्ट होता है कि संजीव के कहानी साहित्य में बिहार तथा झारखंड में स्थित आदिवासियों के गीतों के साथ हिंदी के महान कवियों की काव्य पंक्तियाँ भी परिलक्षित होती है जिससे काव्यत्मक शैली प्रभावात्मक बन पडी है।

8. व्यंगात्मक शैली :

संजीव की कहानियाँ मजदूर, शोषण, कामगार, पूँजीपतिवर्ग, सामाजिक, विषमता, गरीबी एवं बेकारी व अर्थाभाव भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था पर केन्द्रीत हैं। इसी कारण उनकी कहानियों में व्यंग्य का प्रभाव परिलक्षित होता है। उदा. 'अपराध' कहानी में शाचिन अपराध पर शोध कार्य करने वाले सिध्दार्थ से कहता है "मेरी फॉसी तक नहीं रुकोगे? व्यवस्था का पीठिका पर टँगे मेरे वजूद के सवालिये निशान से कतराने लगा है, तुम्हारा शोध"[16]

जीवन के विविध पहलुओं की यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए तथा समाज में स्थित अवगुण, बुरी प्रवृत्ति विसंगति पर कडा प्रहार करने के लिए व्यंग्य एक सफल शस्त्र के समान है। इस प्रकार संजीव की कहानियों में सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य शैली के माध्यमसे प्रहार किया हुआ दृष्टिगोचर होता है। जैसे ट्रैफिक जाम' कहानी में एक पुलिस पियक्कड को पीटता हुआ कहता है "चल सो भाग यहाँ से... । हम साला पैसा देकर पीता सिपाही जी, आप तो हराम की... और एक धौल पडते ही, गिरकर उठता है पियक्कड। जेब से दो रुपये निकालकर सिपाही के पाँव छूकर गिड गिडाता है। चल साले भेजते हैं हाजत में। नहीं माय-बाप, हम पियेगा नहीं तो तुम जियेगा कैसे। नशाबंदी... नशाबंदी बं... बं... बों... ।"[17] इससे स्पष्ट होता है कि संजीव की कहानियों में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग परिलक्षित होता है।

संक्षिप्त रुप में कहा जा सकता है कि जनता का मन, उसकी भाषा और तर्कों की संजीव गहरी जानकारी रखते है। संजीव की कहानियों में अंग्रेजी बंगाली, संथालीआदि के शब्दों और वाक्यों का प्रयोग मिलता है। कहानी की बुनावट में उसकी आवश्यक और स्वाभाविक उपस्थिती है। उन्होंने भाषा, पात्र, स्थिति, काल, विषय, कथ्य आदि भाषा का प्रयोग भावों के अनुरुप किया है। संजीवने कहानी कहने की पुरानी और आधुनिक सभी शैलियों का प्रयोग किया है। उन्होंने लोककथा, लोकगीत एवं कविताओं को भी कहानी के शिल्प विन्यास में जगह दी है। मिथक, फैंटसी, मुहावरा, कहावते, प्रतीक, आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक फिल्म, भाषण, संवाद, साक्षात्कार, पत्रात्मक, काव्यात्मक आदि, विविध शिल्पगत शैलियों का प्रयोग किया है। लेकिन उनकी ज्यादा तर कहानियों में कथावाचकों की शैली और फ्लैश बैक शैली का उपयोग हुआ है। यह इनकी कहानियों की प्रमुख पहचान है।

स्पष्ट है कि संजीव ने कहानी की संवेदना को प्रभाव शाली बनाने के लिए नये-पुराने प्रचलित-अप्रचलित सभी शिल्पगत शैलियों का प्रयोग सफलता से किया हैं।

संदर्भ –

1. डॉ. गुलाबराय – 'काव्य के रुप', पृ. 225 प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 1983
2. संजीव – 'आप यहाँ है।', पृ. 43, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1984
3. संजीव – 'प्रेतमुक्ति', पृ. 11, दिशा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1995
4. संजीव – 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' पृ. 133, यात्री प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1987
5. संजीव – 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' पृ. 90-91, यात्री प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1987
6. वही – 'भूमिका तथा अन्य कहानियाँ' पृ. 116, पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1984
7. वही – 'प्रेतमुक्ति ' पृ. 65, दिशा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1995
8. वही – 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' पृ. 127
9. वही – 'खोज ' पृ. 13, दिशा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2000
10. वही – 'आप यहाँ है। ' पृ. 95
11. वही – 'आप यहाँ है। ' पृ. 33
12. वही – 'दुनिया की सबसे हसीन औरत ' पृ. 106, दिशा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1987
13. वही – 'ब्लैकहोल' पृ. 19, दिशा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1997
14. Encyclopaedia Britannica पृ. 930
15. संजीव – 'प्रेरणास्त्रोत और अन्य कहानियाँ' पृ. 166, किताब घर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1996
16. वही – 'तीस साल का सफरनामा ' पृ. 30, दिशा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1981
17. वही – 'आप यहाँ है। ' पृ. 80